आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 4 March 2022 **Website**: www.shivbabas.org

धारणा - *आज से स्वप्न में भी व्यर्थ न आये ऐसा पुरुषार्थ करना है*

बाबा ने आकर हमें पवित्र बनने का सम्पूर्ण ज्ञान दिया है। और प्योरीटी की पार्सोनालीटि ही सबसे बड़ी पार्सोनालीटि है। संसार में भी जो बहुत पवित्र हुए उनका ही बहुत ज्यादा मान हुआ।

शिवाजी को भी उनके पवित्रता के कारण उनको चरित्रवान माना गया। संत ज्ञानेश्वर बहुत पवित्र थे। उनके पवित्रता का महत्व हो गया।

ऐसे बहुत साधु संत है जो संसार को बहुत कुछ दिया। संसार को देने का उनके श्रेष्ठ संकल्प रहा।

हम भी सेवा के लिए जब कोई विशेष पार्सोनालीटि को बुलाते है तो उससे बहुत लोग आते है। नाम होता है। पार्सोनालीटि की ओर ही सब आकर्षित होते है।

हमारी पार्सोनालीटि है प्योरीटी की। हम सब भाई बहनों की प्योरीटी की ओर सारा संसार आकर्षित होता है।

हमारी प्योरीटी ललाट से चमकती है। हमारे बोल से चमकती है। और जो कार्य हम भिन्न-भिन्न साधनों के द्वारा करते है सेवा का, तन-मन-धन की एनर्जी लगाकर करते है, समय देते है, उससे कई गुना ज्यादा कार्य हमारे प्योरीटी की पार्सोनालीटि करेगी। आकर्षित करेगी सभी देवकुल की आत्माओं को। सभी धर्मों की अच्छी आत्माओं को।

तो हम ध्यान दे। हमारे अंदर पवित्रता का बल बढ़ता चला जा रहा है। और यह बल है जब हम कर्मेन्द्रियाँजीत बन जाते है। जब हम व्यर्थ संकल्पों से मुक्त हो जाते है। जब हम साधारण संकल्पों से परे रहने लगते है। जब हम श्रेष्ठ स्वमान में स्थित हो जाते है। जब एक के सिवाय हमारा आकर्षण और कहीं नहीं रह जाता है।

तो हम ध्यान देंगे इस महान पार्सोनालीटि की ओर। प्योरीटी, पहले कर्म से फिर बोल से भी, संस्कारों से भी, स्वभाव से भी और संकल्पों से भी धारण करनी है।

बहुत बड़ा सबजेक्ट है प्योरीटी की। इसमें कोई भी बिल्कुल निराश न हो। स्वप्न तक भी हमें पवित्र बनना है। हमारा स्वप्न भी सतोप्रधान बन जाये। हम व्यर्थ स्वप्न से भी मुक्त हो जाये।

हमारी शक्तियाँ भी कहीं नष्ट न हो। केवल साधनायें करते चले ....

" मैं इस देह में मेहमान हूँ .. यह देह तो प्रभु की अमानत है .. उसने मुझे सेवा अर्थ दी है .. यह कर्मेन्द्रियाँ भी मेरे कन्ट्रोल में है .. मैं आत्मा मालिक हूँ .. मैं स्वराज्यधिकारी हूँ .. स्वयं की राजा हूँ "

इसके बहुत अच्छी प्रैक्टिस करते चलेंगे। कर्मेन्द्रियों के सभी रसों से भी हम मुक्त होते चले। तो प्योरीटी का बहुत बल हमारे अंदर भरता जायेगा।

अगर ब्रह्मचर्य पालन करने के बाद हम अपने चित को शान्त और निर्मल न किया, हम श्रेष्ठ स्वमान में स्थित न रहे, तो हमारी प्योरीटी तो रहती है, उससे संसार को बल भी मिलता है लेकिन पवित्रता का महान बल हमसे दूर रहता है।

जबकि यही बल सबसे बड़ा शस्त्र है। इसी के द्वारा प्रकृति भी पावन बनती है। और इसी के द्वारा हीरों एक्टर्स विश्व की स्टेज पर प्रख्यात होंगे।

तो आईये आज सारा दिन ....

यह देह बाबा की अमानत है .. मुझे बाबा से मिली है .. मैं तो इसमें गेस्ट हूँ .. बस मैं आत्मा इसमें आई हूँ .. और अपना कार्य पूर्ण करके इसे छोड़कर वापिस चले जाना है "

यह अभ्यास बहुत अच्छी तरह करेंगे। और अशरीरीपन ... घन्टे में तीन-चार बार कर ले।

हमें बहुत अच्छा योगी बनना है तो बहुत अच्छा अभ्यास करना। ऐसे नहीं की सवेरे भूल गया और शाम को याद आया।

तो इस अभ्यास की हम धुन लगायेंगे और साथ में स्वमान भी लेंगे ...

" मैं पवित्रता का फरिश्ता हूँ "

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org